Volume: 4 Issue: 1 Pages: 07-11

शिक्षक शिक्षा व सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (एसईएल): विधियाँ, संभावित प्रभाव एवं चुनौतिया

[*1] **Dr. Sunil Kumar Pandey**

[*1] Assistant Professor, (Faculty of Education), Maharana Pratap Government P.G. College, Hardoi, Uttar Pradesh, India.

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 6.876
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 06/Dec/2024
Accepted: 03/Jan/2025

***Corresponding Author**
Dr. Sunil Kumar Pandey
Assistant Professor, (Faculty of Education), Maharana Pratap Government P.G. College, Hardoi, Uttar Pradesh, India.

सारांश:
सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (एसईएल-SEL) शिक्षा के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में वर्तमान समय में पहचान बनाती जा रही है, जो सहानुभूति, आत्म-जागरूकता एवं पारस्परिक संचार जैसे आवश्यक जीवन कौशल को शैक्षणिक ज्ञान का आवश्यक व अभिन्न अंग मानती है। भारत में, शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में एसईएल का एकीकरण अपने प्रारंभिक चरण में है, फिर भी शिक्षण अभ्यास-प्रथाओं तथा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के रूपान्तरण एवं अन्य शैक्षणिक परिणामों को प्रभावित करने की इसकी क्षमता बहुत अधिक है। इस शोध पत्र में शिक्षक शिक्षा में एसईएल की भूमिका, इसके क्रियान्वयन की विधियों, भारतीय शिक्षा प्रणाली पर इसके संभावित प्रभाव तथा इसके सम्मुख आने वाली चुनौतियों की सांगोपांग विश्लेषण व विवेचना की गयी है। विवेचना को भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक परिदृश्य के अनुरूप प्रासंगिक बनाने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द: सामाजिक, भावनात्मक, शिक्षक शिक्षा, प्रणाली, दक्षता ।

प्रस्तावना:

सामाजिक व भावनानात्मक अधिगम (एसईएल-SEL) सभी युवाओं एवं वयस्कों को व्यक्तिगत एवं शैक्षिक रूप से आगे बढ़ने, सकारात्मक सम्बन्ध विकसित करने तथा बनाए रखने, आजीवन सीखते रहने तथा अधिक न्यायपूर्ण एवं देखभाल करने वाले समाज के निर्माण में योगदान करने में सहायता कर सकता है।

विद्यार्थियों में संज्ञानात्मक एवं भावनात्मक क्षमताओं का विकास समग्र शिक्षा का मूलाधार है। सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (एसईएल) में ऐसे कौशल सम्मिलित हैं, जो भावनात्मक बुद्धिमत्ता, आत्म-प्रबंधन एवं स्वस्थ पारस्परिक संबंधों को बढ़ावा देते हैं। शिक्षक (एसईएल-SEL) प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, एत्दर्श उनके प्रशिक्षण के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए आवश्यक शैक्षणिक रणनीतियों एवं दक्षताओं को पर्याप्त रूप से संबोधित करने की आवश्यकता है।

भारत में, जहाँ शैक्षिक असमानताएँ एवं सामाजिक-आर्थिक विविधताएँ व्याप्त हैं, शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में (एसईएल-SEL) को सम्मिलित करना इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक परिवर्तनकारी मार्ग प्रदान कर सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य:- प्रस्तुत शोध पत्र के अग्रलिखित उद्देश्य हैं-

1. शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में (एसईएल-SEL) को एकीकृत करने के प्रभावी प्रविधियों की विवेचना करना।
2. भारत में शिक्षकों, विद्यार्थियों तथा व्यापक शैक्षिक पारिस्थितिकी तंत्र पर (एसईएल-SEL) के संभावित प्रभाव का आँकलन करना।
3. शिक्षक शिक्षा में (एसईएल-SEL) को लागू करने में चुनौतियों की पहचान व उनका विश्लेषण करना तथा उनसे निपटने के लिए समाधान प्रस्तावित करना। ।

विवेचना

सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (एसईएल) की कहानी उतनी ही पुरानी है जितनी शिक्षकों और विद्यार्थियों के मध्य प्रथम सम्पर्क। एसईएल के सिद्धांत हर प्रकार की देखभाल तथा सहयोगात्मक सम्बन्धों में पाये जाते हैं। यह सूस्पष्ट है कि सम्पूर्ण शैक्षिक इतिहास में शिक्षा के हितधारकों यथाः विद्यार्थी, विद्यालय, परिवार तथा समुदाय के मध्य एक शक्तिशाली सहभागिता व साझेदारी पायी जाती रही है। लेकिन इस क्षेत्र को औपचारिक बनाने का कार्य हॉल के वर्षों में ही में प्रारम्भ हुआ है। सन् 1968 में, येल विश्वविद्यालय के बाल अध्ययन केंद्र में डॉ. जेम्स कॉमर (James Comer) तथा उनके सहयोगियों ने

न्यू हेवन (New Haven) व कनेक्टिकट (Connecticut) के दो विद्यालयों में 'समग्र बालक' ('whole child ') के समर्थन के में अपने विचारों को व्यवहार में लाने के लिए एक कार्यक्रम प्रारम्भ किया। सन् 1980 के दशक के प्रारम्भ तक, दोनों विद्यालयों में व्यवहार संबंधी चुनौतियों में गिरावट देखी गई तथा उनका शैक्षणिक प्रदर्शन भी राष्ट्रीय औसत से अधिक हो गया। उस कार्य को आगे बढ़ाते हुए, न्यू हेवन पब्लिक स्कूल के अधीक्षक, जॉन डॉव, जूनियर (John Dow, Jr.) ने सामाजिक विकास पर जिले भर में ध्यान केंद्रित करने का आह्वान किया। सन् 1987-1992 तक, टिमोथी श्राइवर (Timothy Shriver) एवं डॉ. रोजर पी. वीसबर्ग (Roger P. Weissberg) के नेतृत्व में शिक्षकों और शोधकर्ताओं के एक समूह ने 12वी स्तर की कक्षाओं के लिए SEL रणनीतियों को लागू करने के लिए न्यू हेवन सामाजिक विकास कार्यक्रम प्रारम्भ किया।

सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (एसईएल) काफी हद तक निवारक एवं समुत्थानशीलता (resilience) पर अनुसंधान से विकसित हुई है, एसईएल में रुचि 1990 के दशक के मध्य में गोलेमैन के 'इमोशनल इंटेलेंज' (1995) व गार्डनर के 'मल्टीपल इंटेलिजेंस' (1993) के प्रकाशन के साथ बढ़ी, हॉलाकि इसमें उच्च स्तर की रुचि आज भी बनी हुई है। अनुसंधानों से पता चलता है कि एसईएल के सकारात्मक परिणामों की संख्या बढ़ रही है, तथा अनेक देश अपने विद्यालयों में इसे अपना रहें है।।

विशेष रूप से विद्यालयों की सहायता प्रणाली के संदर्भ में एसईएल शिक्षण वास्तव में शिक्षकों एवं अभिभावकों तथा शैक्षणिक व सामाजिक-भावनात्मक अधिगम के मध्य संबंधों में सामंजस्य स्थापित करने का कार्य करती है। सामाजिक एवं भावनात्मक शिक्षा (एसईएल) को मानव विकास के अभिन्न अंग के रूप में परिभाषित किया जाता हैं। एसईएल वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से सभी युवा व वयस्क स्वस्थ पहचान विकसित करने, भावनाओं को प्रबंधित करने तथा व्यक्तिगत व सामूहिक लक्ष्यों को प्राप्त करने, दूसरों के लिए सहानुभूति व्यक्त करने, सकारात्मक संबंध स्थापित करने तथा बनाए रखने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल व अभिवृत्तियों का अर्जन व अनुप्रयोग करते हैं तथा उत्तरदायित्वपूर्ण एवं देखभाल युक्त निर्णय लेने में सक्षम हो पातें हैं।

सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (एसईएल) मनोवृत्ति, कौशल, अभिवृत्ति एवं भावनाओं का वर्णन विश्लेषण व प्रबन्धन करती है, यह विद्यार्थियों में विकास मानसिकता, धैर्य तथा विद्यालय में अपनेपन की भावना का विकास करती है, इस प्रकार यह विद्यार्थियों को विद्यालय, कैरियर एवं जीवन में सफल होने में सहायता करती है। शिक्षाशास्त्री इन कौशलों के लिए अनेक नामों का उपयोग करते हैं, जैसे 'गैर-संज्ञानात्मक कौशल', 'मृदु कौशल (Soft Skills)', '21वीं सदी के कौशल', 'चरित्र शक्ति' या 'समग्र व्यक्ति'।

विद्यालय सेटिंग में एसईएल को देखते समय, विद्यालय को तीन सामान्य क्षेत्रों पर माप व सुधार प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता हैः- विद्यार्थियों की दक्षता, (या कौशल), विद्यार्थी सहायता व पर्यावरण, तथा शिक्षक कौशल परिप्रेक्ष्यः

1. विद्यार्थियों की दक्षताओं में सामाजिक, भावनात्मक एवं प्रेरक कौशल सम्मिलित होते हैं जो छात्रों को विद्यालय, उनके करियर तथा जीवन में सफल होने में सहायता करते हैं। छात्र दक्षताओं के उदाहरणों में धैर्य व विकास मानसिकता सम्मिलित हैं।
2. छात्र समर्थन व पर्यावरण में वह वातावरण सम्मिलित होता है जिसमें छात्र अधिगम करते हैं, जो उनकी शैक्षणिक सफलता, उनके सामाजिक-भावनात्मक विकास तथा एक अच्छे मनुष्य के रूप में उनके विकास को संभव बनाता है। छात्र सहायता व समर्थन के उपायों तथा विद्यालय के वातावरण में शिक्षक-छात्र संबंध, अपनेपन की भावना (विद्यालय में), तथा विद्यालय में सामाजिक, भावनात्मक व शारीरिक सुरक्षा सम्मिलित हैं।
3. शिक्षक कौशल परिप्रेक्ष्य परिसर में एसईएल का समर्थन, सहायता व अवलम्ब प्रदान करने के लिए शिक्षक की तत्परता व तैयारी को दर्शाता है। यह अनुक्षेत्र यह देखता है कि क्या शिक्षकों को लगता है कि उनके पास छात्रों के सामाजिक-भावनात्मक आवश्यकताओं को सम्बोधित करने के लिए कौशल, ज्ञान एवं संसाधन हैं। इन उपायों के उदाहरणों में सम्मिलित हैं- एसईएल एवं विद्यालय में सकारात्मक सामाजिक व भावनात्मक पर्यावरण के सृजन से सम्बन्धित व्यावसायिक शिक्षा।

शिक्षक शिक्षा में सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (एसईएल-SEL) को लागू करने की विधियाँ

सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (एसईएल) को सुरक्षित, अच्छी तरह से प्रबंधित, स्व-भागीदारी एवं देखभाल युक्त विद्यालय, कक्षा-कक्ष तथा अन्य शिक्षण वातावरण के संदर्भ में प्रदान किया जाता है। इन सीखे गए कौशलों को विद्यालय, घर एवं समाज में पूनर्बलित किया जाता है। सामाजिक-भावनात्मक अनुदेशों से सभी बच्चों को लाभ हो सकता है, जिनमें वे लोग भी सम्मिलित हैं जो जोखिम में होते हैं, नकारात्मक व्यवहार में संलग्न होना प्रारम्भ कर रहे हैं या जो पहले से ही कोई महत्वपूर्ण समस्या प्रदर्शित कर रहे हैं। अधिकांश एसईएल कार्यक्रमों का लक्ष्य सार्वभौमिक रोकथाम व प्रचार हैः- अर्थात् प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के बजाय सामाजिक व भावनात्मक सक्षमता को विकसित करके व्यवहार संबंधी समस्याओं की रोकथाम। हॉलाकि सामाजिक-भावनात्मक सक्षमता के अनुसार मध्यम से गहन उपचार की आवश्यकता हो सकती है लेकिन एसईएल प्रोग्रामिंग का उद्देश्य सभी बालको के व्यक्तिगत विशेषताओं एवं आवश्यकताओं के अनुरूप सामाजिक एवं सांवेगिक विकास को सुनिश्चित करना, उन्हें स्वस्थ व्यवहार विकसित करने में सहायता करना तथा उनके कु-अनुकूलित एवं अस्वास्थ्यकर व्यवहार का निवारण है।

शिक्षक शिक्षा में प्रभावी एसईएल (SEL) कार्यक्रमों के लिए संरचित पद्धतियों की आवश्यकता होती है, जो सैद्धांतिक ज्ञान एवं अनुभवात्मक अधिगम दोनों पर ध्यान केंद्रित करती हैं। सामान्य तौर पर उपयोग किए जाने वाले प्रमुख आयाम निम्नलिखित हैं-

1. एसईएल का सेवा-पूर्व शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में एकीकरण (Integration of SEL into Pre-Service Teacher Education Curriculum)

विवरण (Description):- एसईएल दक्षताओं को बी.एड., डी.एल.एड. एवं इसी तरह के अन्य प्रमाणपत्रों जैसे सेवा-पूर्व कार्यक्रमों में सम्मिलित किया जाना चाहिए। इसमें ऐसे मॉड्यूल बनाना सम्मिलित है, जो पारंपरिक विषयों के साथ-साथ एसईएल के सिद्धांत व अभ्यास को सिखाते हैं।

क्रियान्वयन (Emplementation)

- आत्म-जागरूकता, सहानुभूति एवं संघर्ष समाधान पर ध्यान केंद्रित करने वाले विशेष एसईएल पाठ्यक्रम को डिज़ाइन करना। कक्षा प्रबंधन के लिए एसईएल को शैक्षणिक तकनीकों के साथ एकीकरण को सुनिश्चित करना।
- रोल-प्लेइंग तथा समूह गतिविधियों जैसे व्यावहारिक प्रशिक्षण घटकों को सम्मिलित करना।
- उदाहरण (Example): शिक्षा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता नामक पाठ्यक्रम में चिंतनशील जर्नलिंग, सहयोगी कार्य और केस स्टडी को जोड़ा जा सकता है।

2. व्यावसायिक विकास कार्यशालाओं का आयोजन (Organizing Professional Development Workshops)

विवरण (Description):- सेवा-पूर्व शिक्षकों के लिए नियमित कार्यशालाएँ उनके कौशल को अपडेट कर सकती हैं तथा विकसित

हो रही कक्षा की गतिशीलता के अनुरूप एसईएल रणनीतियाँ प्रस्तुत कर सकती हैं।

क्रियान्वयन (Emplementation)

- भावना विनियमन या सचेतनता (mindfulness) जैसे विशिष्ट एसईएल घटकों पर विशेष सत्रों का आयोजन करना।
- सिमुलेशन, कहानी कथन एवं अनुभवात्मक अभ्यास जैसे अन्तक्रियात्मक रणनीतियों का उपयोग करना।
- उदाहरण (Example): कक्षाओं में तनाव प्रबंधन के लिए सचेतनता (mindfulness) अभ्यास पर केंद्रित एक सप्ताहांत कार्यशाला का अयोजन।

3. अनुभवात्मक शिक्षण कार्यक्रम (Experiential Learning Programs)

विवरण (Description):- शिक्षक सर्वाधिक तब सीखते हैं जब वे उन प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से सम्मिलित होते हैं जिन्हें उनको सिखाने की आवश्यकता होती है। अनुभवात्मक शिक्षण व्यावहारिक अनुप्रयोग के साथ-साथ व्यक्तिगत एसईएल (SEL) विकास को बढ़ावा देता है।

क्रियान्वयन (Emplementation)

- टीम-निर्माण अभ्यास जैसी बाहरी गतिविधियों का आयोजन करना।
- कक्षा सिमुलेशन की सुविधा प्रदान करना जहाँ शिक्षक जटिल सामाजिक-भावनात्मक परिदृश्यों का सामना करते हैं।
- उदाहरण (Example): ऐसे सिमुलेशन का आयोजन करना, जहाँ शिक्षक तनाव व संघर्ष की एक नकली परिस्थिति का सृजन कर कक्षा का प्रबंधन करते हैं तथा इसे हल करने के लिए एसईएल (SEL) सिद्धांतों को लागू करते हैं।

4. सहकर्मी मेंटरशिप एवं सहयोगात्मक शिक्षण (Peer Mentorship Collabrative Learning Programs)

विवरण (Description):- मेंटरशिप कार्यक्रम अनुभवी शिक्षकों द्वारा नये शिक्षकों को मार्गदर्शन है जिससे कि वे एसईएल (SEL) रणनीतियों को प्रभावी ढंग से लागू करने में करने में सक्षम हो सके हैं।

क्रियान्वयन (Emplementation)

- निरंतर मार्गदर्शन के लिए नये शिक्षकों को एसईएल (SEL) प्रशिक्षित परामर्शदाताओं के साथ जोड़ना।
- एसईएल (SEL) सिद्धांतों के व्यावहारिक अनुप्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए समूह चर्चा, सहकर्मी मूल्यांकन तथा सहयोगी शिक्षण की सुविधा प्रदान करना।
- प्रभावी समस्या-समाधान हेतु सहयोगी समूहों की सुविधा प्रदान करना।
- उदाहरण (Example): एसईएल अभ्यास मंडल का गठन करना, जहाँ शिक्षक अपने अनुभव साझा कर सकें तथा चुनौतियों के समाधान पर विचार-विमर्श कर सकें।

5. डिजिटल उपकरणों एवं ई-लर्निंग संसाधनों का समावेश (Incorporation of Digital Tools and E-Learning Resources)

विवरण (Description):- एसईएल को सभी क्षेत्रों के शिक्षकों के लिए सुलभ तथा मापनीय बनाने के लिए ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉम मोबाइल ऐप सहित अद्यतन प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना।

क्रियान्वयन (Emplementation)

- निर्देशित ध्यान, एसईएल पाठ योजनाएँ तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता का आँकलन प्रदान करने वाले ऐप का विकास करना।
- एसईएल विशेषज्ञों की विशेषता वाले वेबिनार का आयोजन।
- उदाहरण (Example): माइंडस्पार्क फॉर एजुकेटर्स जैसे ऐप का उपयोग जो दैनिक एसईएल टिप्स एवं तकनीक प्रदान करता है।

6. प्रत्यावर्तन एवं जर्नलिंग अभ्यास (Reflection and Journaling Practices)

विवरण (Description):- शिक्षकों को कक्षा के अनुभवों के प्रति अपनी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं का आत्मनिरीक्षण करने तथा उनका दस्तावेजीकरण करने के लिए प्रोत्साहित करना, आत्म-जागरूकता को बढ़ावा देता है।

क्रियान्वयन (Emplementation)

- शिक्षक शिक्षा में एक नियमित गतिविधि के रूप में चिंतनशील लेखन को सम्मिलित करना।
- मैंने आज संघर्षों को कैसे संभाला? या आज मेरे शिक्षण में कौन सी भावनाएँ हावी रहीं? जैसे संकेतों का उपयोग करना।
- उदाहरण (Example): कक्षा में भावनात्मक एवं सामाजिक अंतः क्रियाओं को लक्षित करने वाले प्रश्नों के साथ एक साप्ताहिक प्रतिबिंब पत्रिका की व्यवस्था व रख-रखाव।

7. एसईएल सामग्री का सांस्कृतिक व प्रासंगिक अनुकूलन (Cultural and Contextual Adaptation of SEL Content)

विवरण (Description):- यह सुनिश्चित करना कि एसईएल सामग्री सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक व भाषाई रूप से समावेशी हो ताकि शिक्षक विविध पृष्ठभूमि युक्त विद्यार्थियों के साथ प्रतिध्वनित हो सके।

क्रियान्वयन (Emplementation)

- एसईएल सामग्री का स्थानीय भाषाओं में अनुवाद करना।
- स्थानीय सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों के लिए केस स्टडी व रोल-प्लेइंग परिदृश्य तैयार करना।
- उदाहरण (Example): जाति-प्रजाति आधारित पूर्वाग्रहों या ग्रामीण-शहरी असमानताओं जैसी समुदाय-विशिष्ट चुनौतियों को संबोधित करने वाला एक एसईएल मॉड्यूल।

8. सचेतनता एवं तनाव प्रबंधन तकनीकों का समावेश (Incorporation of Mindfulness and Stress Management Techniques)

विवरण (Description):- सचेतनता एवं तनाव प्रबंधन एसईएल के मूलभूत तत्व हैं, जो शिक्षक के कल्याण को बढ़ाते हैं।

क्रियान्वयन (Emplementation)

- श्वास लेने की तकनीक जैसे सचेतनता अभ्यासों को दैनिक दिनचर्या में सम्मिलित करना।
- शिक्षकों को प्रगतिशील मांसपेशी विश्राम एवं निर्देशित मानस दर्शन (अपेनंसप्रंजपवद) में प्रशिक्षित करना।
- उदाहरण (Example): शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान प्रातः कालीन सचेतनता सत्रों का आयोजन।

9. रोल-प्लेइंग और सिम्युलेटेड कक्षा-कक्ष परिदृश्य (Role-Playing and Simulated Classroom Scenarios)

विवरण (Description):- रोल-प्लेइंग, शिक्षकों को वास्तविक जीवन की भावनात्मक एवं सामाजिक स्थितियों को प्रभावी ढंग से संभालने का अभ्यास करने में सहायता करता है।

क्रियान्वयन (Emplementation)

- साथियों के संघर्षों को हल करने या विघटनकारी व्यवहारों को प्रबंधित करने जैसे परिदृश्यों का सृजन करना।
- उपायों को परिष्कृत करने के लिए साथियों और प्रशिक्षकों से फीडबैक का प्राप्त करना।
- उदाहरण (Example): एक परिदृश्य जहाँ एक छात्र निराशा प्रदर्शित करता है, जिसके लिए शिक्षक को सहानुभूति और समस्या-समाधान कौशल लागू करने की आवश्यकता होती है।

10. चिंतनशील केस स्टडी और सफलता की कहानियों का उपयोग (Use of Reflective Case Studies and Success Stories)

विवरण (Description):- एसईएल के क्रियान्वयन में वास्तविक जीवन के उदाहरणों का अध्ययन शिक्षकों को व्यावहारिक अंतर्दृष्टि और प्रेरणा प्रदान कर सकता है।

क्रियान्वयन (Emplementation)

- शिक्षण सामग्री में केस स्टडी को सम्मिलित करना।
- विविध शैक्षिक सेटिंग्स में एसईएल सफलताओं की कहानियों का विश्लेषण करना।
- उदाहरण (Example): एसईएल पहलों के माध्यम से अनुशासनहीनता तथा शरारतों के दरों को कम करने वाले किसी विद्यालय का केस स्टडी।

11. मूल्यांकन व प्रतिपुष्टि तंत्र (Assessment and Feedback Mechanisms)

विवरण (Description):- शिक्षकों की एसईएल योग्यता को मापने से निरंतर सुधार एवं जवाबदेही सुनिश्चित होती है।

क्रियान्वयन (Emplementation)

- एसईएल अभ्यास प्रथाओं के मूल्यांकन के लिए रूब्रिक विकसित करना।
- रचनात्मक प्रतिक्रिया प्रदान करने के लिए स्व-मूल्यांकन एवं सहकर्मी समीक्षाओं का उपयोग करना।
- उदाहरण (Example): एक प्रतिपुष्टि तंत्र जहाँ सहकर्मी सहानुभूति, संचार एवं अनुकूलनशीलता जैसे मानदंडों पर एक-दूसरे को रेट करते हैं।

12. सामुदायिक जुड़ाव एवं माता-पिता की भागीदारी (Community Engagement and Parental Involvement)

विवरण (Description):- व्यापक रूप से समुदाय और माता-पिता को सम्मिलित करना यह सुनिश्चित करता है कि एसईएल प्रथाएँ कक्षाओं से परे विस्तारित हैं।

क्रियान्वयन (Emplementation)

- अभिभावकों के लिए एसईएल कार्यशालाओं की सुविधा के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करना।
- विद्यालयों में एसईएल अभ्यास-प्रथाओं का समर्थन करने के लिए समुदाय-नेतृत्व युक्त पहलों को प्रोत्साहित करना।
- उदाहरण (Example): घर पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियों को साझा करने के लिए शिक्षक-अभिभावक एसईएल दिवसों का आयोजन करना।

यह विधियाँ सामूहिक रूप से शहरी केंद्रों से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों तक भारतीय शिक्षक शिक्षा की विविध आवश्यकताओं को संबोधित करती हैं। यें रणनीतियाँ यह सुनिश्चित करतीं हैं कि एसईएल सिद्धांतों को न केवल पढ़ाया जाए बल्कि उन्हें आत्मसात भी किया जाए तथा भारतीय शैक्षिक परिदृश्य की अनूठी चुनौतियों के अनुकूल बनाया जाए।

शिक्षक शिक्षा में एसईएल एकीकरण का संभावित प्रभाव (Potential Impact of SEL Integration in Teacher Education)

भारतीय शिक्षक शिक्षा प्रणाली में सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा (SEL) के एकीकरण का गहरा व बहुआयामी प्रभाव हो सकता है। इससे सम्बन्धित यहाँ कुछ मुख्य बिंदु दृष्टव्य हैं:-

1. **वर्द्धित शिक्षण प्रभावशीलता:-** सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा (SEL) शिक्षकों को कक्षा की गतिशीलता को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने, सकारात्मक शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने तथा छात्रों की भावनात्मक आवश्यकताओं को संबोधित करने की क्षमता से सज्जित करता है।
2. **विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास:-** शोधों से पता चलता है कि सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा (SEL) प्रशिक्षित शिक्षक छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन, भावनात्मक कल्याण तथा सामाजिक दक्षताओं को बढ़ाने के लिए बेहतर स्थिति में होते हैं।
3. **सामाजिक-सांस्कृतिक चुनौतियों का समाधान:-** भारत में, जहाँ कक्षाएँ विविध सामाजिक-सांस्कृतिक वास्तविकताओं का एक सूक्ष्म जगत् जैसी होती हैं। सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा (SEL), शिक्षकों और विद्यार्थियों के मध्य समावेशिता तथा सांस्कृतिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देता है।
4. **शैक्षिक अंतराल को पाटना:-** सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा (SEL), वंचित पृष्ठभूमि के छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक चुनौतियों का समाधान कर सकती है, जिससे उन्हें औपचारिक शिक्षा प्रणालियों में बेहतर ढंग से एकीकृत होने में सहायता मिल सकती है।
5. **शिक्षक कल्याण को बढ़ावा देना:-** एसईएल प्रशिक्षण शिक्षकों को तनाव का प्रबंधन करने, थकान को कम करने तथा प्रतिधारण दर (तमजमदजपवद तंजमे) में सुधार करने में सहायता करता है। एसईएल प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले शिक्षकों में बर्नआउट का स्तर कम तथा वृत्तिक संतुष्टि अधिक होती है, जिससे अधिक टिकाऊ शिक्षण कार्यबल में योगदान मिलता है।
6. **भावनात्मक समुत्थानशीलता में अभिवृद्धि:-** एसईएल प्रशिक्षण शिक्षकों की भावनात्मक समुत्थानशीलता (मउवजपवदंस तमेपसपमदबम) विकसित करता है, जिससे उन्हें शिक्षा प्रणाली में चुनौतियों व अनिश्चितताओं से निपटने में सहायता मिल सकती है।
7. **शिक्षक-छात्र संबंधों को सुदृढ़ करना:-** एसईएल में कुशल शिक्षक छात्रों के साथ मजबूत, सकारात्मक व विश्वास-आधारित संबंध स्थापित करने में अधिक सक्षम होते हैं, जिससे जुड़ाव एवं प्रेरणा के स्तर में वृद्धि होती है।
8. **एनईपी 2020 के लक्ष्यों के साथ संरेखण:-** एसईएल का एकीकरण (integration of SEL) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के समग्र शिक्षा तथा सामाजिक व भावनात्मक दक्षताओं के विकास पर बल देने का समर्थन करता है।
9. **अनुशासन से सम्बन्धित मुद्दों में कमी:-** एसईएल में प्रशिक्षित शिक्षक संघर्षों को संबोधित करने तथा उन्हें कम करने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होते हैं, जिससे विद्यालय में सकारात्मक वातावरण का निर्माण होता है।
10. **सामुदायिक संबंधों को मजबूत बनाना:-** एसईएल-प्रशिक्षित शिक्षक माता-पिता एवं समुदायों के साथ बेहतर ढंग से जुड़ सकते हैं, जिससे विद्यार्थियों के लिए एक सहायक व सकारात्मक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण होता है।
11. **मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देना:-** एसईएल का एकीकरण शिक्षकों में मानसिक स्वास्थ्य संचेतना में अभिवृद्धि कर सकता है, जिससे वे भावनात्मक चुनौतियों का सामना कर रहे विद्यार्थियों की पहचान कर सकते हैं एवं उनका समर्थन व सहायता कर सकते हैं।

शिक्षक शिक्षा में सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा (SEL) को एकीकृत करने से भारत के शिक्षा परिदृश्य में सार्थक परिवर्तन लाया जा सकता है, भावनात्मक रूप से सुदृढ़ शिक्षकों का पोषण हो सकता है जो करुणा एवं क्षमता के साथ कक्षाओं का नेतृत्व कर सकते हैं।

शिक्षक शिक्षा में सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा (SEL) को लागू करने में चुनौतिया

सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा (SEL) के लाभों के बावजूद, अनेकानेक चुनौतियाँ एसईएल को शिक्षक शिक्षा में निर्बाध रूप से एकीकृत करने में बाधा उत्पन्न करतीं हैं, यथाः-

1. **जागरूकता की कमीः**- कई शिक्षक प्रशिक्षक व प्रशिक्षण संस्थान एसईएल के महत्व और लाभों के बारे में पूरी तरह से अवगत नहीं हैं, जिसके कारण शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में इसकी उपेक्षा की जाती रही है। नीति निर्माताओं, शिक्षकों एवं हितधारकों के मध्य एसईएल की सीमित समझ एक प्रमुख बाधा है।
2. **पारंपरिक शैक्षणिक दृष्टिकोणः**- शिक्षक शिक्षा में रटने की शिक्षा और पारंपरिक शिक्षण विधियों पर ध्यान केंद्रित करने की प्रवृत्ति एसईएल अभ्यास प्रथाओं को एकीकृत करने में प्रमुख चुनौती है।
3. **पाठ्यक्रम का बोझः**- शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम पहले से ही सघन हैं, अस्तु इसके साथ एसईएल मॉड्यूल को एकीकृत करना एक अतिरिक्त बोझ के रूप में देखा जा सकता है।
4. **सीमित संसाधनः**- शिक्षक शिक्षा संस्थानों में एसईएल को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए आवश्यक वित्तीय, मानवीय और भौतिक संसाधनों की कमी है।
5. **शिक्षक शिक्षकों के लिए अपर्याप्त प्रशिक्षणः**- शिक्षक प्रशिक्षक स्वयं एसईएल में प्रशिक्षित नहीं हो सकते हैं, जिससे उनके लिए इच्छुक शिक्षकों को ये कौशल सिखाना मुश्किल हो जाता है।
6. **सांस्कृतिक बाधाएँः**- भारतीय समाज में भावनाओं और सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करना प्रायः अच्छा नही माना जाता है, जो एसईएल अभ्यास-प्रथाओं को खुले तौर पर अपनाने में बाधा उत्पन्न करता है।
7. **मूल्यांकन की चुनौतियाँः**- एसईएल के परिणामों को मापना जटिल और व्यक्तिपरक है, शिक्षकों व विद्यार्थियों के एसईएल दक्षताओं को मापने के लिए मानकीकृत उपकरणों का अभाव है, जिससे शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में इसकी प्रभावशीलता का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन करना कठिन हो जाता है।
8. **नीतिगत अंतरालः**- हाँलाकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (छम्च्) 2020 में समग्र शिक्षा पर पर्याप्त बल दिया गया है, फिर भी शिक्षक शिक्षा में एसईएल को एकीकृत करने से सम्बन्धित सीमित विशिष्ट मार्गदर्शन है।
9. **परिवर्तन का प्रतिरोधः**- पारंपरिक तौर-तरीकों के आदी शिक्षक और प्रशासक एसईएल अभ्यास प्रथाओं को अनावश्यक या गौण मानते हैं तथा उन्हें अपनाने का विरोध कर सकते हैं।
10. **विविध शैक्षिक संदर्भः**- भारत की भाषाई विविधता के कारण अनेक भाषाओं में एसईएल संसाधनों का विकास आवश्यक है। भारत का विविध सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक परिदृश्य सभी के लिए उपयुक्त एसईएल ढाँचे को डिजाइन और क्रियान्वयन में चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है।
11. **समय की कमीः**- शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की प्रायः सीमित अवधि होती है, जिससे एसईएल को व्यापक रूप से आच्छादित करने के लिए अपर्याप्त समय बचता है।
12. **शोध व साक्ष्य का अभावः**- भारतीय शिक्षक शिक्षा में एसईएल की प्रभावशीलता पर स्थानीय शोध व साक्ष्य का अभाव है, जिससे हितधारक इसके क्रियान्वयन में निवेश करने में हिचकिचाते हैं।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए नीति समर्थन, क्षमता निर्माण, संसाधन आवंटन तथा शिक्षा को सर्वांगीण विकास से जोड़ने एवं इसमें सांस्कृतिक बदलाव सहित अन्य व्यवस्थित प्रयासों की आवश्यकता है।

निष्कर्ष एवं सूझाव:

भारत में शिक्षक शिक्षा में सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा (SEL) को एकीकृत करने से शैक्षिक परिदृश्य में क्रांति लाने की क्षमता है। शिक्षकों को आवश्यक भावनात्मक व सामाजिक दक्षताओं से सज्जित करके, एसईएल (SEL) प्रणालीगत चुनौतियों का समाधान कर सकती है तथा विद्यार्थियों के समग्र विकास को बढ़ावा दे सकती है। हालाँकि, संसाधन की कमी, पाठ्यक्रम की कठोरता एवं सांस्कृतिक प्रतिरोध जैसी बाधाओं पर काबू पाने के लिए नीति निर्माताओं, शिक्षकों और समुदाय के सहयोगात्मक प्रयासों की आवश्यकता है। ऐसे शोध अध्ययनों पर ध्यान केन्द्रित करना होगा जो शिक्षकों एवं विद्यार्थियों पर एसईएल (SEL) प्रशिक्षण के निरंतर प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए अनुदैध्य अध्ययनों पर ध्यान केंद्रित करे। इसके अतिरिक्त, व्यापक पहुँच व क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के लिए एसईएल एकीकरण के लिए मापनीय (scalable) मॉडल विकसित किए जाने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. Collabrative for Academic, Social and Emotional Learning (CASEL), Fundamental of Social and Emotional Learning. https://casel.org/fundamentals-of-sel/ Retrived on 30/12/2024
2. Demir B. at al. The mediater role of Social-emotional Learning Skills in the Relationship between Depression and Mental Well-being. WAJES. 2024; 15(3). https://www.researchgate.net/publication/385884292. Retrived on 30/12/2024
3. Elias MJ. at al. Social and Emotional Learning, 2006. https://www.researchgate.net/publication/284593261. (Uploaded by Maurice J. Elias on 30, June 2019.) Retrived on 30/12/2024
4. Elias MJ. at al. Implementation, sustainability, and scaling up of social-emotional and academic innovations in public schools, School Psychology Review. 2003; 32:303-319.
5. Gardner H. Multiple Intelligence: The theory and Pracrice. New York: Basic, 1993.
6. Goleman D. Emotional Intelligence, New York: Bantam, 1995.
7. Panorama Education. User Guide, Social-Emotional Learning, 2015, 2.
8. पाण्डेय के. पी. (2005), नवीन शिक्षा मनोविज्ञान, वाराणसी, विश्यविद्यालय प्रकाशन।
9. पाण्डेय आर. एस. (2008), शिक्षा दर्शन, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।
10. पाण्डेय एस0 के0 (2024), कल्याण के लिए शिक्षा, गाजियादः पी एण्ड एकेडमी।
11. पाण्डेय एस0 के0 एवं अन्य (2022), मनोवैज्ञानिक कल्याण एवं रक्षा प्रक्रमः अवधारणा, आवश्यकता व प्रभाव, आई.जे.सी.आर.टी. 10(11), पृ0सं0: ई. 565-570।
12. लाल एवं शर्मा (2011), भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, मेरठ, आर. लाल बुक डिपो।
13. सारस्वत एम. (2007), शिक्षा मनोविज्ञान की रूप-रेखा, लखनऊ, आलोक प्रकाशन।
14. सिंह ए. के. (1997), उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास।
15. सिहं आर. एन. एवं अन्य (2020), आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।